साप्ताहिक

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 22-28 अप्रैल 2024 वर्ष-10, अंक-01

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

15 अप्रैल तक लगभग 21 लाख 66 हजार टन से अधिक गेहूं की खरीदी

मध्य प्रदेश सरकार खरीदेगी 24 हजार करोड़ का गेहूं

एमएसपी पर प्रति क्विंटल 125 रुपए प्रति क्विंटल बोनस

जागत गांव हमार, भोपाल।

लोकसभा चुनाव की सरगर्मी के बीच म.प्र. में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर विपणन वर्ष 2024-25 के लिए गेहूं की खरीदी तेजी से चल रही है। इस वर्ष लगभग 100 लाख मी. टन गेहूं खरीदी का लक्ष्य रखा गया है। 15 अप्रैल तक लगभग 21 लाख 66 हजार टन से अधिक गेहूं की खरीदी की जा चुकी है। इसके एवज में 2 लाख 63 हजार से अधिक किसानों को लगभग 3355 करोड़ रुपए का भुगतान हो गया है। यदि एमएसपी पर सुचारू रूप से खरीदी होती रही तो इस वर्ष लगभग 100 लाख टन गेहूं की खरीदी पर किसानों को लगभग 24 हजार करोड़ से अधिक राशि का भुगतान होने की उम्मीद है। क्योंकि एमएसपी 2275 रु. प्रति क्विंटल पर मोहन यादव सरकार ने 125 रुपए प्रति क्विंटल बोनस की भी घोषणा की है जिससे गेहूं का एमएसपी मूल्य 2400 रुपए क्विंटल हो गया है।

देश में कुल 320 लाख टन गेहूं की खरीदी एमएसपी पर की जाएगी- म.प्र. में दूसरे अग्रिम उत्पादन अनुमान के मुताबिक वर्ष 2023-24 में लगभग 329 लाख टन से अधिक गेहूं उत्पादन होने का अनुमान लगाया गया है। इसमें से विपणन वर्ष 2024-25 में लगभग 100 लाख टन गेहूं खरीदने का लक्ष्य केन्द्र सरकार ने म.प्र. को दिया है। जबकि देश में कुल 320 लाख टन गेहूं की खरीदी एमएसपी पर की जाएगी। प्रदेश में 15 लाख से अधिक किसानों ने गेहूं विक्रय के लिए पंजीयन कराया है।

बोनस भुगतान के लिए सरकार को खर्च करने होंगे 3850 करोड़ रुपए

सरकार की ओर से किसानों को गेहूं की खरीद पर बोनस का भुगतान करने के लिए प्रदेश सरकार पर 3850 करोड़ रुपए का वित्तीय भार आएगा । विपणन सीजन 2023-24 में गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2125 रुपए प्रति क्विंटल था जिसे केंद्र सरकार ने इस रबी विपणन सीजन 2024-25 के लिए 2275 रुपए कर दिया है। ऐसे में किसानों को पिछले साल के मुकाबले इस साल गेहूं बेचने से 150 रुपए अधिक मिलेंगे। वहीं राज्य सरकार की ओर से 125 रुपए का बोनस भी मिलेगा। ऐसे में मध्यप्रदेश के किसानों को इस बार गेहूं बेचने से प्रति क्विंटल 275 रुपए पिछले साल के मुकाबले अधिक मिलेंगे।

वर्ष 2022-23 में 46 लाख मी. टन गेहूं खरीदा गया था

मप्र सांख्यिकी विभाग के अनुसार वर्ष 2022-23 में 5 लाख 90 हजार किसानों से 46 लाख मी. टन गेहूं खरीदा गया था और किसानों को 9271 करोड़ रुपए का भुगतान हुआ था। इसी प्रकार वर्ष 2021-22 में 128.5 लाख टन खरीदी के बदले 25 हजार 301 करोड़ का भुगतान तथा वर्ष 2020-21 में 129.42 लाख टन के विरुद्ध 24 हजार 806 करोड़ का भुगतान किया गया था।

किसानों को राहत

गेहूं खरीदी के लिए नोडल विभाग खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग है जिसने प्रदेश में लगभग 3642 खरीदी केन्द्र बनाए हैं। ज्ञातव्य है प्रदेश में बेमौसम बरसात तथा ओलावृष्टि के कारण कुछ क्षेत्रों में गेहूं फसल प्रभावित हुई है, दाना भी चमकविहीन हो गया है। लस्टर लैस दाने को भी खरीदने के निर्देश केन्द्र एवं राज्य सरकार ने दिए हैं।

उंचाई ढाई फीट, पूरे देश में सिर्फ 1 हजार

सीएम हाउस पहुंची दुर्लभ प्रजाति की पुंगनूर गाय, प्रदेश की दूसरी

भोपाल। मुख्यमंत्री निवास में विशेष प्रजाति की पुंगनूर गाय और नंदी का आंध्रप्रदेश से आगमन हुआ है। सीएम मोहन यादव ने सोशल मीडिया पर गाय की पूजा करते फोटो साझा की। मुख्यमंत्री ने लिखा कि आज अत्यंत शुभ दिन है, मंगल बेला है, जब सौभाग्य से निवास पर विशेष प्रजाति की पुंगनूर गाय और नंदी का आंध्र प्रदेश से आगमन हुआ है। निवास पर गौमाता मीरा और नंदी महाराज गोपाल जी का हार्दिक स्वागत है। निवास पर लक्ष्मी नामक गौमाता पहले से है। छोटे पैर और छोटे कद की पुंगनूर नस्ल की गाय विलुप्त होने की कगार पर थी, अब न सिर्फ आंध्र प्रदेश बल्कि देश के अन्य स्थानों पर भी संरक्षण के प्रयास हो रहे हैं। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री ने मकर संक्राति पर पुंगनूर गाय को चारा खिलाते फोटो सामने आया थे।

गाय का नाम पुंगनूर शहर पर: पुंगनूर एक दुर्लभ प्रजाति की गाय है। गाय का नाम आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के शहर पुंगनूर पर रखा गया है। पुंगनूर गाय सफेद और हल्के भूरे रंग की होती है। जिनका माथा काफी चौड़ा और सींग छोटे होते हैं। पुंगनूर गाय की औसत ऊंचाई ढाई फीट से तीन फीट के बीच होती है। इसका वजन 105 से 200 किलोग्राम तक होता है।

एक से 25 लाख रुपए कीमत: पुंगनूर गाय एक लाख रुपए से लेकर 25 लाख रुपए तक की कीमत में मिल जाती है। देश में इन गायों की संख्या सिर्फ 1000 के आसपास ही रह गई है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इफको के नैनो यूरिया प्लस को अगले तीन साल के लिए अधिसूचित किया

नैनो यूरिया प्लस को सरकार ने दी मंजूरी किसानों को होगा फायदा

जागत गांव हमार, नई दिल्ली।

सरकार ने नैनो तरल यूरिया के बाद अब नैनो यूरिया प्लस को भी मंजूरी दे दी है। नैनो यूरिया प्लस, नैनो यूरिया का एक उन्नत संस्करण है जो पौधे के विकास के विभिन्न चरणों में नाइट्रोजन की बेहतर आपूर्ति और पोषण प्रदान करेगा। भारत सरकार द्वारा नैनो यूरिया प्लस को 3 वर्षों तक के लिए मंजूरी दी है। इस अधिसूचना के बाद किसानों को बाजार में नैनो यूरिया प्लस भी मिलने लगेगा।

देश की प्रमुख उर्वरक निर्माता कंपनी इफको द्वारा नैनो यूरिया (तरल) के बाद अब नया प्रोडक्ट नैनो यूरिया प्लस बनाया गया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इफको के नैनो यूरिया प्लस को अगले तीन साल के लिए अधिसूचित किया है। नैनो यूरिया प्लस इफको के नैनो यूरिया का एक उन्नत संस्करण है।

ज्यादा प्रभावी होने का दावा: नैनो यूरिया प्लस से उपज में होगी वृद्धि इफको के एमडी एवं सीईओ डॉ। यू।एस। अवस्थी ने एक्स प्लेटफार्म पर जानकारी साझा करते हुए लिखा कि मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इफको के नैनो यूरिया प्लस (तरल) 16प्रतिशत एन 2/2 व जो 20प्रतिशत एन 2/1 के बराबर है, को भारत सरकार द्वारा 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।

उपज वृद्धि और स्मार्ट खेती में मदद: उन्होंने आगे बताया कि इफको नैनो यूरिया प्लस, नैनो यूरिया का एक उन्नत संस्करण है जो पौधे के विकास के विभिन्न चरणों में नाइट्रोजन की बेहतर आपूर्ति और पोषण प्रदान करता है। मृदा स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक यूरिया और अन्य नाइट्रोजन उर्वरकों की जगह इसका प्रयोग किया जा सकता है। यह सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता और दक्षता को भी बढ़ाता है। यह क्लोरोफिल चार्ज करते हुए उपज वृद्धि और स्मार्ट खेती में मदद करता है।

कितनी होगी कीमत?

इफको ने अभी नैनो यूरिया प्लस की कीमत में कोई वृद्धि नहीं की है। इसकी 500 मिली की बॉटल 225 रुपये की दर से किसानों को मिलेगी। केंद्र सरकार दानेदार यूरिया की बजाय नैनो तरल यूरिया के इस्तेमाल को बढ़ावा दे रही है। इसके लिये बीते दिनों रबी सीजन में देश में अनेक स्थानों पर ड्रोन की मदद से फसलों पर नैनो यूरिया का छिड़काव किया गया था। बता दें कि नैनो यूरिया की गुणवत्ता पर सवाल उठने के बाद इसका अपग्रेड वर्जन काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। ये साफ है की इफको ने फसलों पर इसका प्रभाव बढ़ाने के लिए इसे अपग्रेड किया है, ताकि ऐसे सवालों का जवाब दिया जा सके।

फसल की नाइट्रोजन आवश्यकता को पूरा करता है नैनो यूरिया

यह प्रभावी रूप से फसल की नाइट्रोजन आवश्यकता को पूरा करता है, पत्ती प्रकाश संश्लेषण, जड़ के विकास, प्रभावी कल्ले और शाखाओं को बढ़ाता है।

- यह पौधों के अंदर नाइट्रोजन और अन्य पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ता है।
- यह फसल की उपज की पोषक गुणवत्ता को बढ़ाता है।
- फसल उत्पादकता में वृद्धि और लागत में कमी करके किसानों की आय में वृद्धि करता है।
- उच्च दक्षता के कारण, यह पारंपरिक यूरिया की आवश्यकता को 50 या उससे अधिक तक कम कर सकता है।
- किसान नैनो यूरिया की एक बोतल (500 मिली) आसानी से स्टोर या संभाल सकते हैं। यह मिट्टी, हवा और पानी की गुणवत्ता के संरक्षण में मदद करता है।

ग्राम सोमलवाड़ा में कंचन शरद वर्मा जैविक फसल और फल की खेती करती हैं

हल्दी की खेती बन गई कंचन का सौभाग्य, लाखों के फायदे की उम्मीद

जागत गांव हमार, नर्मदापुरम।

हल्दी को भारतीय शास्त्रों में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है और यकीन मानिए यह वाकई में मध्य प्रदेश में एक किसान का सौभाग्य बन गई है। होशंगाबाद से कुछ दूरी पर स्थित नर्मदापुरम जिले की किसान कंचन वर्मा की सफलता की कहानी आपको हैरान कर देगी। ग्राम सोमलवाड़ा की महिला किसान कंचन शरद वर्मा जैविक फसल और फल की खेती करती हैं। इस व्यवसाय की जरिए इलाके में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट काम करते हुए इन्होंने कई पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। एक एकड़ में 40 क्विंटल गेहूं की पैदावार कर 2020 में कृषि कर्मण अवॉर्ड भी जीता है। अब नर्मदा किनारे की यही मिट्टी यहां पर हल्दी के खेती के लिए सफलता की गारंटी बनकर उभरी है। हल्दी की इस सफल खेती का लीडर अगर कंचन वर्मा को कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

साल 2020 में शुरू की खेती: बेहतर रिटर्न की इच्छा और रोज नए प्रयोग करने की आदत से प्रेरणा लेकर कंचन वर्मा ने साल 2020 में हल्दी की खेती में कदम रखा। ग्रेजुएट और एक अनुभवी किसान कंचन ने एक टीवी शो में दिखाई गई क्षमता से प्रेरणा ली और उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) से इस दिशा में मार्गदर्शन मांगा। केवीके से मिले ज्ञान से लैस, कंचन ने हल्दी की सांगली किस्म को चुना। हल्दी की यह किस्म अपनी उच्च करक्यूमिन सामग्री और औषधीय गुणों के लिए मशहूर है। यह विकल्प उनकी सफलता में सहायक साबित हुआ। गहरे नारंगी रंग और मजबूत जड़ों के कारण इसकी बंपर फसल हुई और पारंपरिक फसलों की तुलना में उनकी आय दोगुनी हो गई।

रंग लाई कंचन की मेहनत

कंचन ने मिट्टी की गुणवत्ता को समझा और ह्यूमस मैटेरियल से भरपूर अच्छी तरह से पानी सोखने वाली रेतीली दोमट मिट्टी का चयन करते हुए सावधानी से खेती योग्य भूमि तैयार की। ऑर्गेनिक फार्मिंग के तरीकों को अपनाते हुए, उन्होंने मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और कीड़ों के हमलों को कम करने के लिए गाय के गोबर और जीवामृत पर भरोसा किया|| इससे हल्दी की वृद्धि के लिए सर्वश्रेष्ठ परिस्थितियां तैयार हुईं। सही तरह से देखभाल और ध्यान रखने के साथ ही साथ कंचन ने अंकुरित हल्दी के बीज बोए। साथ ही उन्होंने उसके विकास की बारीकी से निगरानी की। कंचन ने बीज रोपण के एक महीने बाद पौधों को मिट्टी लगाने की कला सीखी।

पाउडर से हुई अच्छी कमाई

हल्दी के लंबे मौसम के बावजूद, कंचन की दृढ़ निश्चय और मेहनत रंग लाई और सिर्फ आठ महीनों में 100 क्विंटल की भरपूर फसल उन्हें हासिल हुई। हल्दी प्रसंस्करण की मूल्य संवर्धन क्षमता को पहचानते हुए, कंचन ने कटे हुए रिजोम्स यानी प्रकंदों को सावधानी से धोया, उबाला, सुखाया, छीला और पीसकर हाई क्वालिटी वाला हल्दी पाउडर बनाया। उनके इस कदम से न सिर्फ हाई रिटर्न उन्हें मिला बल्कि उन्होंने स्थानीय मांग को भी आकर्षित किया। इससे बाजार में मध्यस्थों की जरूरत खत्म हो गई और उपभोक्ताओं को सीधी बिक्री सुनिश्चित हुई।

30 लाख रुपये की आमदनी

आज, कंचन वर्मा हल्दी की खेती में एक लीडर बन गई हां। वह साथी किसानों को विविधता और नए प्रयोगों के लिए प्रेरित कर रही हैं। 10 एकड़ भूमि पर खेती और इस सीजन में 30 लाख रुपये की अपेक्षित आय के साथ, उनकी सफलता की कहानी एग्रीकल्चर एंटरप्रेन्योरशिप और सस्टेनेबल प्रैक्टिस का सबूत हैं। कंचन किसी समय में गेहूं की खेती करती थीं लेकिन आज उन्हें हल्दी की खेती ने एक नया मुकाम दिया है।

खेत मे ही मकान बना कर निवास करती हैं कंचन

खेत मे ही मकान बना कर निवास करती हैं कंचन शझरद वर्मा। महिला किसान ने आंध्रप्रदेश की सुरोमा किस्म की हल्दी की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा रही है। जिले मे अन्य किसान भी इन से प्रेरित होकर हल्दी की खेती करने लगे है।

बेचने के लिए प्रचार- प्रसार या मंडी जाने की जरूरत नहीं

कंचन वर्मा ने बताया कि हमें हल्दी बेचने के लिए प्रचार- प्रसार या मंडी जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। हमारे आसपास के गांव में रहने वाले लोगों को जैसे ही सूचना प्राप्त होती ह। वैसे ही सभी लोग घर से ही हल्दी खरीद कर ले जाते हैं। अधिकांश थोक व्यापारी हल्दी अधिक खरीद कर लेकर जाते हैं। हल्दी के साथ ही अमरूद,कटहल, बैंगन, भिंडी समेत अन्य फल सब्जियां भी बगीचे में लगाए गए हैं।

कसरावद में 41.2 डिग्री पहुंचा पारा

पपीते के पौधों को लू-धूप से बचाने थैलियां बांधी

जागत गांव हमार, खरगोन

नर्मदा किनारे के खेतों में किसान पपीता की नई फसल लगा रहे हैं। किसानों ने विशेष रूप से पौधे बुलाए हैं। किसान छोटे पौधों को कपड़े की थैली से ढंककर बड़ा करने के जतन कर रहे हैं। लू और धूप से बचाने के लिए किसानों ने पपीते के पौधे पर कपड़े की थैलियां बांधी हैं, ताकि फसल सुरक्षित रहे। किसानों ने कहा- गर्मी के दिनों में फसल की सुरक्षा जोखिमभरी साबित होती है। पौधों की देखभाल नियमित रूप से करना पड़ती है, क्योंकि तेज धूप व लू से पौधे खराब हो जाते हैं। किसानों ने इस बार कसरावद क्षेत्र में करीब 400 हेक्टेयर में पपीता फसल लगाई है। इनमें से बाड़ी, पीपलगोन, सावदा आदि क्षेत्र की 25 से 30 हेक्टेयर में लगी पपीता फसल की सुरक्षा के लिए थैली लगाई है।

किसानों ने बताया पपीते का एक पौधा 3 रुपए में आता है। वहीं प्रत्येक थैली की कीमत 1 रुपए है। इस मामले में कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके त्यागी ने बताया पपीता फसल 40 डिग्री से अधिक तापमान सहन नहीं कर पाता है, इसलिए सेफ्टी क्रॉप से बचाव किया जाना जरूरी है।

40 डिग्री तापमान होने पर सिकुड़ने लगती हैं पपीते के पौधे की पत्तियां

विशेषज्ञों ने बताया कि अभी पारा 41.2 डिग्री चल रहा है। देर रात तक लू के थपेड़े भी चल रहे हैं। पपीते की फसल 40 डिग्री से अधिक तापमान सहन नहीं कर पाती । इससे ज्यादा होने पर पत्तियां सिकुड़ जाती हैं और पौधे की ग्रोथ रुक जाती है।

मूंग व उड़द की फसल

मूंग व मास 338 और उर्द की टी9 किस्म को गेंहू की कटाई के पश्चात् मई के माह में लगा सकते है। मूंग की फसल 6। दिन में व मास 90 दिन में पककर तैयार हो जाती है, और 3-7 कुंटल पैदावार भी मिल जाती है। मूंग के 8किलो बीजों को 16 ग्रा. बाविस्टिन की मात्रा से उपचारित करने के साथ ही राइजोवियम जैव खाद से भी उपचारित कर छाया में सुखा लेते है। इसके बाद 1 फ़ीट की दूरी पर बनी नालियों में 1/4 बोरा यूरिया व 1.5 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालकर ढक देते है। इसके बाद बीजो को 2 इंच की दूरी व 2 इंच की गहराई में बोते हैं। यदि बसंतकालीन गन्ने को 3 फुट की दूरी पर बोया गया है, तो 2 लाइनों के मध्य सह-फसल के रूप में भी इस फसल को बो सकते है। इस स्थिति में आप 1/2 बोरा डी.ए.पी. को सह फसल के रूप में अतिरिक्त डालें।

मई के महीने में इन फसलों की खेती किसानों के फायदेमंद

भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए हरी खाद की वाली फसल की बोवनी लाभदायक

जागत गांव हमार, भोपाल।

जो किसान भाई अपने खेतो में रबी के फसल की कटाई कर चुके हैं, वह मई के महीने में अगली फसल की बुवाई कर सकते हैं। मई के महीने में भी आप कई तरह की फसलों की बुवाई कर अच्छी उपज ले सकते हैं। इसके अलावा भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए हरी खाद वाली फसल भी लगा सकते हैं। भूमि की सेहत सुधारने के लिए देशी गोबर की खाद या कम्पोस्ट को काफी लाभदायक माना जाता है, किन्तु आजकल पशुपालन काफी कम हो गया है, जिस वजह से देशी खाद भी कम मात्रा में मिल पाती है। अप्रैल के महीने में गेंहू की कटाई के बाद और जून के महीने में धान/मक्का की बुवाई से मध्य मई के महीने में आपको जो समय मिलता है। उसमे आप कमजोर खेत में हरी खाद को तैयार करने के लिए लोबिया, मूंग या ढेंचा की फसल लगा सकते हैं। इसके बाद जून के महीने में बुवाई से पहले जुताई कर हरी खाद खेत में मिला सकते है, इससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है।

मूंगफली की फसल: मूंगफली की एस जी 84 एवं 722 किस्म को अप्रैल के अंतिम सप्ताह व मई के महीने में लगा सकते है। जिसके बाद यह फसल अगस्त के अंत तक या सितंबर के आरंभ में तैयार हो जाती है। मूंगफली की फसल हल्की दोमट व उचित जल निकासी वाली भूमि में उगाए। 38 KG दाना बीजो को 200 प्रतिशत थीरम के साथ ही राइजोवियम जैव खाद से उपचारित करे। इसके बाद बीजो को प्लांटर की मदद से 9 इंच की दूरी पर 2 इंच की गहराई में बोए। बीजाई करने पर 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट, ।0 चत्न जिप्सम, 1/4 बोरा यूरिया और 1/3 बोरा म्यूरेट ऑफ़ पोटाश डालें।

कपास की फसल

कपास की बुवाई के लिए मई का महीना सबसे बढ़िया होता है, क्योकि इस दौरान फसल को सर्वोत्तम 21-27 डिग्री तापमान मिल जाता है। टिंडो को तैयार होने के लिए दिन में 27-32 डिग्री तापमान और राते ठंडी जरूरी है, इस तरह का मौसम सितंबर से नवंबर के महीने में होता है। खेत से गेंहू की फसल हटते ही, कपास की बीजाई की तैयारी शुरू कर दे। कपास की उन्नत किस्मों में एच डी 107, एच 777, ए ए एच 1, एच एस 6, एच एस 45 को हरयाणा में तथा संकर किस्मों में एल एच 1776, एल एम एच 144, एफ 13.8, एफ 846, एल डी 694 व 327 को पंजाब में लगा सकते हैं। कपास के बीजो को लगाने के लिए बीज ड्रिल या प्लास्टर का उपयोग कर 2 फुट लाइनों में 1 फुट पौध की दूरी रखकर 2 इंच गहरा बोते है। 2-3 हफ्तों के पश्चात् बीमार व कमज़ोर पौधों को निकाल दे। एक एकड़ में तकरीबन 20,000 कपास के पौधों को लगा सकते है।

लोबिया की फसल

लोबिया फसल की एफ एस 68 किस्म 65- ।0 दिन में पककर तैयार हो जाती है, जिसे आप गेंहू कटने के बाद व धान, मक्का की फसल के बीच में लगा सकते है, जिससे आप 3 क्विंटल की पैदावार ले सकते है। 12 किग्रा. बीजो को 1 फुट के फासले पर बनी लाइनों में लगाए, तथा पौधों के मध्य 3-4 इंच का फासला रखे। बीजाई के समय 2 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट व 1/3 बोरा यूरिया डालें, तथा 20-25 दिन पश्चात् पहली निराई-गुड़ाई करे।

बैंगन की खेती

मई के महीने में आप बैंगन की खेती भी कर सकते हैं, क्योकि यह एक गर्म जलवायु वाली फसल है, जो ठंडे के प्रति अतिसंवेदनशील है। मार्च से लझेकर जून माह तक शादियों का सीजन रहता है, जिस वजह से सब्जी की खपत अधिक मात्रा में होती है। शादी जैसे कार्य्रक्रमो में बैंगन की सब्जी जरूर बनाई जाती है, ऐसे में अगर आप बैंगन की खेती करते है, तो आप अच्छी कमाई भी कर सकते है। लोगो के लिए बैंगन की पूसा पर्पल व पूसा भैरव किस्में उपयुक्त है।

फूलगोभी की खेती

फूलगोभी की फसल किसी भी मौसम में लगाई जा सकती है, लेकिन मई के महीने में फूलगोभी की खेती करना काफी फायदेमंद हो सकता है। क्योकि गर्मी के मौसम में कम पैदावार की वजह से फूलगोभी का भाव अधिक रहता है। ऐसे में अगर आप फूल गोभी की खेती करते है, तो यह आपके लिए अच्छा विकल्प हो सकता है।

कद्दू की खेती

जुलाई और अगस्त के महीने में कद्दू का दाम काफी कम रहता है, लेकिन गर्मी का महीना आपको कद्दू की फसल से मोटी कमाई दे सकता है। इस मौसम में कद्दू की पैदावार काफी कम हो जाती है, इसलिए भाव ज्यादा मिलता है। इसके साथ ही कद्दू को लगाने के लिए ज्यादा जगह की भी जरूरत नहीं होती है। कद्दू बेहद कम समय में बढ़िया मुनाफा दे देता है।

मूली की खेती

मई के महीने में मूली भी लगाई जा सकती है। मूली को आप अपने घर में रखे गमले में भी उगा सकते है। मई के महीने में लगाई जाने वाली सब्जियों के बीजो या पौधों को लगाया जाता है। इसके लिए मूली के बीजो को गमले के ऊपर बिखेर देते है, और फिर मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए पानी देते है। मूली के पौधों को खुली धूप आवश्यकता होती है, जिस वजह से मई का महीना ज्यादा उपयुक्त होता है। मूली लगने के 50-60 दिन बाद उखड़ने के लिए तैयार हो जाती है।

टमाटर की खेती

पॉलीहाउस जैसी प्रभावी तकनीक आने के बाद अब वर्ष के 12 महीने टमाटर की खेती कर सकते है। इसकी खेती पूरे वर्ष में किसी भी महीने से शुरू कर सकते है। लेकिन गर्मी का महीना टमाटर की खेती के लिए ज्यादा बेहतर होता है। ऐसे में अगर आप मई के महीने में टमाटर की खेती करते है, तो बढ़िया मुनाफा हासिल कर सकते है।

मिर्च की खेती

मिर्च की खेती रबी और खरीफ की फसल के रूप में की जाती है। लेकिन इसे कभी भी लगा सकते है। खरीफ फसलो की बुवाई मई-जून के महीने में की जाती है, तथा रबी की फसलो को सितंबर से अक्टूबर के महीने में लगाते है। अगर आप गर्मी के मौसम में मिर्च की फसल लगाना चाहते है, तो मई का महीना अच्छा है। मिर्च की उन्नत किस्मों में जवाहर मिर्च -218, जवाहर मिर्च-283, काशी अनमोल, अर्का सुफल, काशी विश्वनाथ तथा संकर किस्मों में काषी सुर्ख, काशी अर्ली या काशी हरिता शामिल है, जिनसे अधिक उपज मिलती है।

जलवायु परिवर्तन से बिगड़ती जा रही है अर्थव्यवस्था की सेहत

वैश्विक स्तर पर जिस तरह से जलवायु में बदलाव आ रहे हैं उससे देश-दुनिया में अर्थव्यवस्था की सेहत बिगड़ रही है। हाल ही में एक नए अध्ययन से पता चला है कि वैश्विक तापमान में तीन डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ जीडीपी को दस फीसदी का नुकसान झेलना पड़ सकता है। अध्ययन के मुताबिक इसका सबसे ज्यादा खामियाजा कमजोर और गर्म जलवायु वाले देशों को भुगतना पड़ेगा, जहां जीडीपी को 17 फीसदी तक की चपत लग सकती है। यह अध्ययन ईटीएच ज्यूरिख, इंपीरियल कॉलेज लंदन, बर्न और डेलावेयर विश्वविद्यालय से जुड़े शोधकर्ताओं की टीम द्वारा किया गया है।

यह अध्ययन ईटीएच ज्यूरिख से जुड़े शोधकर्ता पॉल वेडेलिच के नेतृत्व में किया गया है। अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बढ़ते तापमान के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए 33 वैश्विक जलवायु मॉडलों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया है।

अध्ययन में इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि बारिश और तापमान में आते बदलावों की वजह से जलवायु परिवर्तन की यह लागत कहीं ज्यादा भी बढ़ सकती है। अर्थशास्त्री पॉल वैडेलिच ने इस बारे में प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से जानकारी दी है कि, गर्म वर्षों में तापमान के साथ-साथ बारिश में भी बदलाव आता है। ऐसे में उच्च तापमान का अनुमानित प्रभाव वास्तव में कहीं ज्यादा गंभीर होता है। उनके मुताबिक ऐसे में इन बदलावों और चरम सीमा को नजरअंदाज करने से तापमान में होते बदलावों से होने वाले नुकसान को कम करके आंका जा सकता है।

रिसर्च के जो निष्कर्ष सामने आए हैं उनके मुताबिक वैश्विक स्तर पर तीन डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ जीडीपी को हो नुकसान होने का अंदेशा है उसका करीब एक तिहाई हिस्सा भीषण गर्मी से जुड़ा है। हालांकि साथ ही शोधकर्ताओं ने इस बात की भी पुष्टि की है कि यह बढ़ता तापमान कनाडा जैसे ठंडे देशों के लिए फायदेमंद लग सकता है। लेकिन जैसा कि 2021 में भी देखा गया है इसकी वजह से लू जानलेवा रूप ले सकती है जो अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डालती है।

विश्लेषण से पता चला है कि लू का लोगों के जीवन और आर्थिक गतिविधियों पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है। अध्ययन में इस बात की भी पुष्टि हुई है कि तापमान बढ़ने का सबसे ज्यादा असर अफ्रीका और मध्य पूर्व के देशों पर पड़ेगा। शोध में बढ़ते तापमान की वजह से बारिश पर पड़ते प्रभावों का भी खुलासा किया गया है। रिसर्च के मुताबिक तापमान में तीन डिग्री की वृद्धि के साथ वैश्विक स्तर पर भारी बारिश की सम्भावना भी बढ़ जाएगी। आशंका है कि इसकी वजह से वैश्विक जीडीपी में औसतन 0.2 फीसदी की कमी आ सकती है।

हालांकि आपको देखने में 0.2 फीसदी का यह आंकड़ा बड़ा न लगे लेकिन यह मौजूदा अर्थव्यवस्था को देखते हुए 20,000 करोड़ डॉलर से ज्यादा की चोट पहुंचाएगा। इसका सबसे ज्यादा असर चीन और अमेरिका को भुगतना होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि गर्म उष्णकटिबंधीय देशों की तुलना में यह देश भारी बारिश के बहुत कम आदी हैं।

भविष्य में आर्थिक समृद्धि के लिए निर्णायक जलवायु कार्रवाई बेहद महत्वपूर्ण है। रिसर्च के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग को तीन डिग्री की जगह 1.5 डिग्री सेल्सियस पर सीमित करने से हम जलवायु परिवर्तन की वजह से होने वाले वैश्विक नुकसान को दो-तिहाई कम कर सकते हैं। ऐसे में इस अध्ययन में सामने आए नतीजे जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई न करने की महत्वपूर्ण लागत को रेखांकित करते हैं।

शोधकर्ताओं ने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि जलवायु परिवर्तन और चरम घटनाओं के प्रभावों की भविष्यवाणी करना बेहद चुनौतीपूर्ण है, और इसमें अनिश्चितताएं बनी रहती हैं।

शोधकर्ताओं ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि इस अध्ययन में सूखा, समुद्र के जल स्तर में होती वृद्धि, क्लाइमेट टिपिंग पॉइंट और इनके गैर-आर्थिक प्रभावों को शामिल नहीं किया है ऐसे में जलवायु परिवर्तन की कुल लागत इस अनुमान से कहीं अधिक हो सकती है। पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इंपैक्ट रिसर्च (पीआईके) और मर्केटर रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल कॉमन्स एंड क्लाइमेट चेंज (एमसीसी) से जुड़े शोधकर्ताओं ने भी अपने अध्ययन में खुलासा किया था कि यदि तापमान में हो रही वृद्धि जारी रहती है तो सदी के अंत तक वैश्विक अर्थव्यवस्था को करीब 10 फीसदी का नुकसान झेलना पड़ सकता है। वहीं यदि ट्रॉपिक्स की बात करें तो नुकसान का यह आंकड़ा 20 फीसदी को पार कर सकता है। इस बारे में शोधकर्ताओं का कहना है कि जिस तरह से तापमान में हो रही वृद्धि उत्पादकता पर असर डाल रही है।

भारत में भी आर्थिक विकास की धुरी को धीमा कर रहा जलवायु परिवर्तन: उससे विशेष तौर पर कृषि, निर्माण और उद्योग क्षेत्र पर असर पड़ रहा है और उनकी उत्पादकता में कमी आ रही है। इतना ही नहीं इसकी वजह से जिस तरह फसलों की उत्पादकता घट रही है उससे खाद्य सुरक्षा भी खतरे में पड़ सकती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक जलवायु में आता बदलाव न केवल वैश्विक बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक प्रभाव डाल रहा है। इस बारे में डेलावेयर विश्वविद्यालय के जलवायु केंद्र ने अपनी नई रिपोर्ट लॉस एंड डैमेज टुडे हाउ क्लाइमेट चेंज इस इम्पैक्टिंग आउटपुट एंड कैपिटल में खुलासा किया था, कि 2022 में जलवायु परिवर्तन के चलते भारत में जीडीपी को आठ फीसदी का नुकसान झेलना पड़ा था।

देखा जाए तो भारत की जीडीपी को हुआ यह नुकसान 2022 के दौरान उसमें हुई औसत वृद्धि से भी एक फीसदी अधिक है। गौरतलब है कि उस साल भारत के जीडीपी में सात फीसदी का इजाफा दर्ज किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार 2022 तक भारत की कैपिटल वेल्थ में भी 7.9 फीसदी की गिरावट आई है, जिसका मुख्य कारण बुनियादी ढांचे जैसी मानव-निर्मित पूंजी पर जलवायु परिवर्तन की पड़ती मार है।

जर्नल नेचर में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन में सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन के चलते भारत में अगले 26 वर्षों में कमाई 20 से 25 फीसदी तक घट जाएगी। इसका सीधा असर आम आदमी की जेब पर पड़ेगा।

वहीं हिमाचल प्रदेश, उत्तरखंड, और अरुणाचल प्रदेश में इस नुकसान के 10 से 20 फीसदी के बीच रहने का अंदेशा है। आर्थिक रूप से देखें तो यह नुकसान बढ़ते तापमान को दो डिग्री सेल्सियस पर सीमित करने की लागत से भी छह गुणा अधिक है।

कद्दू वर्गीय फसलों की उन्नत काश्त अपनाकर लें भरपूर लाभ

» डा. विशाल मेश्राम, वरिष्ठ वैज्ञानिक
» डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव (कृषि अभि.)
» डॉ. पूजा चतुर्वेदी (कार्यक्रम सहायक)
» डॉ. एस.आर. शर्मा (पौध संरक्षण)
» डॉ. आशुतोष शर्मा (कृषि वानिकी)
» डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी
कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर

कद्दू वर्गीय सब्जियों को हल्की भारी भूमि में सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है। चयन की दृष्टि से अच्छे जल निकास वाली बलुई दुमट जीवांष युक्त भूमि सर्वोत्तम मानी जाती है । मिट्टी का पी.एच. 6.6 से 7.0 के मध्य उपयुक्त होता है । इस वर्ग में कुछ की खेती नदी तट पर बालू में थाला बनाकर भी की जाती है । पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और दो तीन जुताई देशी हल से करके पाटा लगाकर खेत को समतल एवं मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिये। इस वर्ग की सभी फसलें या तो कतारों की मेंड़ पर या थालों में लगाई जाती है। ग्रीष्मकालीन जुताई करने से कीटों के प्यूपे एवं अंड़े नष्ट हो जाते हैं।

खीरा की उन्नत किस्में: पीसीयूएच- 1, पूसा उदय, स्वर्ण पूर्णा और स्वर्ण शीतल। **संकर किस्में:** पंत संकर खीरा- 1, प्रिया, हाइब्रिड-1। **विदेशी किस्में:** जापानी लौंग ग्रीन, चयन, स्ट्रेट- 8 पोइनसेट।

लौकी की उन्नत किस्में: अर्का नूतन, अर्का श्रेयस, पूसा संतुष्टि, पूसा संदेश, अर्का गंगा, अर्का बहार, पूसा नवीन, सम्राट, काशी बहार, काशी कुंडल, काशी कीर्ति एंव काशी गंगा ।

करेला की उन्नत किस्में: ग्रीन लांग, फैजाबाद स्माल, जोनपुरी, झलारी, सुपर कटाई, सफेद लांग, ऑल सीजन, हिरकारी, भाग्य सुरुचि , मेघा दू एफ 1, वरून दू 1 पूनम, तीजारावी, अमन नं. - 24, नन्हा क्र. दू 13।

कद्दू की उन्नत किस्में: पूसा विशवास, पूसा विकास, कल्यानपुर पम्पकिन-1, नरेन्द्र अमृत, अर्का सुर्यामुखी, अर्का चन्दन, अम्बली, सीएस 14, सीओ 1 और 2, पूसा हाईब्रिड 1 और कासी हरित कददू।

– थालों में लगाई जाने वाली फसल में सिंचाई नाली कतार से कतार की दूरी की दुगनी दूरी पर सिंचाई नाली बनाई जाती है एवं इन नालियों के बीच दो कतारें परन्तु त्रिभुजाकार आकार में लगाई जाते हैं और इन पौधों के थालों को मुख्य नाली से जोड़ दिया जाता है। पौधों को खाद भी थालों में दिया जाता है।

–बोनी करने के लिये सर्वप्रथम पौधें की कतार से कतार दुगुनी दूरी पर 60 से.मी. चैड़ी नाली बना ली जाती है एवं नालियों के दोनो तरफ बीजों को इस प्रकार बोया जाता है कि पहली कतार के दो बीजों के मध्य में दूसरी कतार का पौधा आये । एक स्थान पर 4 से 5 बीज की बुवाई करें।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा: सामान्य रूप से सभी फसलों के लिये लगभग खाद एव उर्वरक की मात्रा एक समान होती है प्रति हैक्टेयर 250 से 300 क्विंटल गोबर की खाद, 80 से 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 से 80 कि.ग्रा. स्फुर एवं 50 से 80 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है ।

– गोबर की खाद के साथ स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा एवं 33 प्रतिशत नत्रजन (एक तिहाई नत्रजन की मात्रा) को खेत की अन्तिम जुताई तैयारी के समय कतारों में बोई जाने वाली फसल के लिये फैलाकर दें । यदि फसल को थालों में लगाया जाना है तो मात्रा का निर्धारण फसल की दूरी को ध्यान में रखकर प्रति पौधा निर्धारित करें एवं थालों में खाद डालें ।

– शेष बची नत्रजन को 66 प्रतिशत (दो तिहाई मात्रा) को दो बराबर भागों में बांटकर भाग को बीज बोवाई के 30 दिन एवं 45 से 50 दिन पौधे के चारों और डालकर हल्की सी गुड़ाई कर दें ताकि नत्रजन मिट्टी के साथ मिल जाये। ध्यान रखें नत्रजन के रूप में प्रयोग की जाने वाली खाद पौधों के सीधे सम्पर्क में न आवें ।

बेलों को सहारा देना: वर्षा ऋतु में लगाई गई फसले जैसे लौकी, करेला को सहारा देना उचित होता है । ऐसा करने से फल जमीन के सम्पर्क में न आने के कारण खराब नहीं होते एवं रोगों का प्रकोप कम होता है । इन फसलों को ग्रीष्म ऋतु में भी सहारा दिया जा सकता है या मंडप बनाकर बेलों को चढ़ाया जा सकता है ।

मचान या मण्डप कैसे बनाएं: मचान बनाने के लिये 2.25 से 2.50 मीटर लम्बे बांस के डण्डों को 2.5 ग 2.5 या 3 ग 3 मी. की दूरी पर खेत में लगभग 30 से 40 से.मी. गहरा गाड़ देते है । डण्डों को 1.5 मी. की उंचाई पर लोहे के तार की सहायता से एक दूसरे को बांध देते है , इसके बाद उपर रस्सी या पतले तार से जाल बना दिया जाता है ।

कद्दू वर्गीय फसलों में लगने वाले रोग एवं कीट:

रोग फल विगलन: उचित जल निकास एवं सिंचाई व्यवस्था करें । आवश्यकता से अधिक सिंचाई न करें । डायथेन एम 4 (2 ग्राम /ली. पानी) या मेटालेक्सिल्मेन्कोजेब (1.5 ग्राम /ली. पानी) का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें ।

डाउनी मिलड्यू: डायथेन एम-45 या ब्लाइटाक्स-50 घोल (2.5 ग्राम दवा/लीटर पानी) का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें । **एन्थ्रेक्नोज:** डायथेन जेड-78 या ब्लाइटाक्स-50 घोल का छिड़काव करें। **पर्ण दाग:** डायथेन जेड-78 या ब्लाइटाक्स-50 घोल का छिड़काव करें ।

कीट फलबेधक मक्खी: मेलाथियान (50 ई.सी.)/ डाईक्लोरोवाश का 2 मि.ली. एवं 100 ग्राम गुड़ का एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।

लाल कद्दू भृंग: फसल अंकुरण के तुरन्त बाद मिथाइलपेराथियान 0.2 प्रतिषत पाउडर 20 किलो प्रति हेक्टेयर लगाते समय या क्लोरोपयरिफोश 20: ई.सी. 2 मि.ली. प्रति ली. की दर से अंकुरण के 10 दिन बाद छिड़काव करें। एफिड डाईक्लोरोवाश (2 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव करें ।

सावधानी: रसायनों का प्रयोग ग्रसित पत्तियों एवं फलों को नष्ट करने के बाद करें। रोग एवं कीट रोधक जातियों का प्रयोग करें। जल निकास का उचित प्रबंध करें। कीटनाषकों दवाओं का प्रयोग सूर्योदय के पूर्व करना अधिक लाभदायक होता है। ग्रीष्मकालीन जुताई अवश्य करें एवं फसल चक्र अपनाएं। फलों के नीचे पलवार बिछाने से फल कम खराब होते है ।

विश्व लिवर दिवसः हर साल 20 लाख जिंदिगियां लील रही लिवर की बीमारी

विश्व लिवर दिवस हर साल 19 अप्रैल को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लीवर या यकृत से संबंधित बीमारियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को लिवर के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में शिक्षित करना, लिवर के रोगों के खिलाफ निवारक उपायों को प्रोत्साहित करना और समय रहते पता लगाने और उपचार करना है। लिवर शरीर का एक अभिन्न अंग है। पेट के दाईं ओर पसलियों के नीचे स्थित लिवर एक ऐसा अंग है जो भोजन को पचाने और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह थक्के बनाने वाले कारकों को विकसित करने में भी मदद करता है जो पूरे शरीर में रक्त के उचित संचार में मदद करते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, भारत में लिवर की बीमारियां मृत्यु के शीर्ष दस कारणों में से एक हैं। लीवर को स्वस्थ रखने के लिए, लिवर की बीमारियों से जुड़े कारणों, लक्षणों, निवारक उपायों और उपचारों को समझाना जरूरी है।

विश्व लिवर दिवस का इतिहास: वर्ष 2010 में, यूरोपियन एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ द लिवर (ईएएसएल) ने वर्ष 1966 में ईएएसएल के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पहला विश्व लिवर दिवस मनाया। तब से, हर साल 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस के रूप में मनाया जाता है। ग्लोबल बर्डन ऑफ लिवर डिजीज के मुताबिक, दुनिया भर में हर साल लगभग 20 लाख लोग लिवर की बीमारियों के कारण मरते हैं, यानी 25 मौतों में से एक मौत लिवर की बीमारी के कारण होती है। वर्ष 2030 तक यह संख्या 35 प्रतिशत तक बढ़ने की आशंका जताई गई है। लीवर से संबंधित सभी मौतों में से लगभग दो-तिहाई पुरुषों में होती है।

हर साल लिवर संबंधी रोगों के कारण होने वाली मौतों की संख्या में वृद्धि जागरूकता और रोकथाम के उपायों की कमी के कारण होती है। इस दिन का उद्देश्य लोगों से स्वस्थ जीवन शैली और आहार अपनाने का आग्रह करना है जो लिवर की कार्यप्रणाली को बढ़ावा दे और लिवर रोगों को दूर रख सके।

पर्याप्त नींद लेना, तनाव कम करने के लिए अभ्यास करना, स्वस्थ आहार लेना, नियमित रूप से व्यायाम करना, शराब और तंबाकू से बचना। स्वस्थ और संतुलित आहार लेना। नियमित रूप से रोजाना शारीरिक व्यायाम करना। हेपेटाइटिस सी के लिए परीक्षण। ये कुछ ऐसे उपाय हैं जिन्हें हम अपना कर अपने लिवर को स्वस्थ रख सकते हैं। अगर जल्दी पता चल जाए तो दोनों संक्रमणों का प्रभावी ढंग से इलाज किया जा सकता है।

खेती को फायदे का धंधा बनाने के लिए अब किसान नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। कृषि के क्षेत्र में अब युवाओं का भी रुझान बढ़ रहा है। वहीं 70 साल के किसान, जो जैविक खेती से हर साल 8 से 10 लाख रुपए की कमाई कर रहे हैं। पीले लोग उनका मजाक उड़ाते थे, लेकिन अब वे लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं और आसपास के किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहे हैं।

जैविक खेती शुरू की तो लोगों ने उड़ाया मजाक

हरदा का 70 वर्षीय किसान कमा रहा है लाखों रुपए सालाना, प्रशिक्षण लेने आते हैं स्टूडेंट्स

जागत गांव हमार, हरदा।

किसान जयनारायण राय हरदा जिले की हंडिया तहसील के नयापुरा गांव के रहने वाले हैं। वे 11वीं तक पढ़े हैं। उन्होंने 2023 में 10 एकड़ में जी डब्लू-513 गेहूं लगाया था, जिसमें 150 क्विंटल गेहूं की पैदावार हुई, जो साढ़े चार हजार रुपए क्विंटल के हिसाब से बुक भी हो चुका है। 100 क्विंटल गेहूं जबलपुर जा रहा है। इसके अलावा इंदौर, भोपाल और बैतूल भेज रहे हैं। जयनारायण खाद, केंचुआ और घी-दूध से भी कमाई कर रहे हैं।

2019 में जैविक खेती शुरू की: किसान जयनारायण का कहना है कि पहले मैं भी परंपरागत तरीके से खेती करता था। फिर कुछ दोस्तों ने बोला- आपके पास 100 गायों की गोशाला है, तो आप जैविक खेती क्यों नहीं करते। बहुत सोचने के बाद 2019 में जैविक खेती शुरू की। उस समय लोगों ने मेरा बहुत मजाक उड़ाया। घरवाले भी नाराज हुए। लोगों ने तो पागल तक कह दिया। बोले- ये कैसी खेती कर रहे हो। इसमें अच्छी पैदावार नहीं होती है। शुरुआत में तो लागत भी निकाल पाना मुश्किल हो गया था, लेकिन मैंने ठान लिया था कि अब रसायनयुक्त अन्न नहीं उपजाऊंगा, चाहे कुछ भी हो जाए।

पहले साल मैंने एक एकड़ में जैविक तरीके से गेहूं की फसल लगाई थी, जिसमें करीब 12 क्विंटल उपज हुई। जिसे 4 हजार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बेचा था। वहीं, अगर एक एकड़ में रासायनिक खाद डालता, तो करीब 20 क्विंटल गेहूं की पैदावार होती। 2 हजार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बेचता, तो 40 हजार रुपए की आमदनी होती। जैविक अनाज से मुझे जैविक खेती से 8 हजार रुपए का फायदा हुआ।

जयनारायण बताते हैं कि अब मैं 10 एकड़ में प्राकृतिक खेती कर रहा हूं। इससे अमृत तुल्य अन्न पैदा हो रहा है। मेरा पूरा परिवार भी यही अन्न खाता है। हमने पिछले 5 साल से कभी रिफाइंड तेल का इस्तेमाल नहीं किया। कच्ची घानी का तेल खाते हैं। मैं अभी एक हजार रुपए क्विंटल खाद बेच रहा हूं। पिछले 3 साल में एक लाख 53 हजार रुपए का खाद बेच चुका हूं। 80 हजार रुपए का केंचुआ बेच चुका हूं। गेहूं के बाद खेतों में मूंग लगा देते हैं। एक एकड़ में करीब चार से पांच क्विंटल की पैदावार हो जाती है। इसके अलावा, खरीफ सीजन में सोयाबीन की करीब 80 क्विंटल का उत्पादन हो जाता है। तीनों फसल से सालभर में करीब 8 से 10 लाख रुपए की आमदनी हो जाती है।

2 महीने में बनाते हैं 10 कुंतल वर्मी कंपोस्ट

सबसे पहले 12 फीट लंबी, 4 फीट चौड़ी और दो फीट ऊंची एक वर्मी बेड बना लें। उसमें एक ट्रॉली गोबर और खेतों की अपशिष्ट डाल दें। फिर पानी डालकर ठंडा करें। उसके बाद इसमें 4 से 5 किलो केंचुए छोड़ दें। दो महीने में 10 क्विंटल खाद बनकर तैयार हो जाएगी।

फसलों को बीमारी से बचाने खुद बनाते हैं दवाई

किसान जयनारायण गोशाला से गायों का गोमूत्र इकट्ठा करते हैं, जो 15 से 20 लीटर हो जाता है। इसमें पेड़ों की पत्तियों को मिलाकर फसलों में छिड़काव करने वाली दवाई बनाते हैं। इससे फसलों में किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं लगती है। इस दवाई से खेतों की मिट्टी बहुत मुलायम रहती है।

मिल चुका है सर्वोत्तम कृषक सम्मान

जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय के सोसाइटी ऑफ कृषि विज्ञान की ओर से जयनारायण राय सर्वोत्तम कृषक सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। इनके पास कृषि की पढ़ाई करने वाले कॉलेज के छात्र भी जैविक खाद और खेती का तरीका देखने आते हैं। हरदा के कृषि विभाग में पदस्थ उप संचालक संजय यादव ने बताया कि जिले में जैविक खेती की रकबा बढ़ाने का हम लगातार प्रयास कर रहे हैं।

रासायनिक खाद से बंजर होने लगी थी जमीन

जयनारायण राय का कहना है कि रासायनिक उर्वरकों से कुछ साल तक उत्पादन अच्छा होता है, लेकिन धीरे-धीरे जमीन की उर्वरा शक्तियां कम होने लगती है। धीमी गति से भूमि बंजर होती चली जाती। आखिर में उसमें उत्पादन कम हो जाता है। साथ ही, कैंसर जैसी बड़ी बीमारियां भी इंसान को चपेट में ले लेती हैं। जैविक खेती इसके उलट है। गोबर के खाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद, बैक्टीरिया खाद के उपयोग से जमीन उपजाऊ होती। इससे उत्पादित अनाज, सब्जियां नुकसानदायक नहीं होती। मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होती है। कृषि भूमि के लिए भी।

जानिए रासायनिक और जैविक खेती में प्रमुख अंतर

- रासायनिक खेती में किसानों को खरीफ सीजन में बोवनी की तैयारी के समय कम से कम दो बार जुताई करनी पड़ती है। इसके उलट जैविक खेती में एक बार जुताई करेंगे या नहीं भी करेंगे तो नुकसान नहीं है। इससे बोवनी के समय का खर्च 50 प्रतिशत से भी कम हो जाएगा।
- बोवनी के बाद रासायनिक खेती में खाद डालना जरूरी होता है। ये खाद काफी खर्चीली होती है। जैविक खेती में खाद का खर्च पूरा बच जाता है।
- फसल आने पर कम से कम दो बार रासायनिक खेती में दवाओं का स्प्रे करना होता है, जबकि जैविक खेती में एक बार भी जैविक स्प्रे किया तो खर्च एक चौथाई भी नहीं आता है।
- खरपतवार नष्ट करने में रासायनिक खेती में ज्यादा खर्च होता है। जैविक खेती में मामूली खर्च पर खरपतवार नष्ट की जा सकती है।
- रासायनिक खेती की तुलना में जैविक खेती में एक हेक्टेयर में 20 प्रतिशत उत्पादन कम होता है, तो इससे किसान को नुकसान नहीं होता। उसे रासायनिक की तुलना में फसल के दाम ज्यादा मिलते हैं।
- रासायनिक खेती में खाद का खर्च साल दर साल बढ़ता है, लेकिन जैविक में ऐसा नहीं होता है। खेत की स्थिति साल दर साल सुधरती है।

मध्य प्रदेश में नागपुरी संतरे की सफल खेती

रंग लाई महेश की मेहनत, 3.5 एकड़ में संतरा की खेती,फूल लगते ही 10 लाख में बिका बगीचा

कपास की खेती के लिए मशहूर क्षेत्र में अब हो रही नागपुरी संतरे की पैदावार

पौधे लगाने के चौथे साल से फल आने शुरू हो गए

जागत गांव हमार, भोपाल।

मप्र का निमाड़ क्षेत्र सोयाबीन और कपास की खेती के लिए मशहूर है, लेकिन अब यहां नागपुरी संतरे की भी पैदावार हो रही है। खंडवा के एक किसान ने साढ़े तीन एकड़ जमीन में संतरे का बगीचा लगाकर करीब 7 लाख रुपए तक सालाना कमाई कर रहे हैं। उनकी सफलता देखकर आसपास किसान भी संतरे की खेती की तरफ झुक रहे हैं। खैगांव गांव के 51 साल किसान महेश पटेल 8वीं तक पढ़े हैं। परिवार में वे तीन भाई हैं। सभी खेती-किसानी से जुड़े हैं। महेश पटेल ने 9 साल पहले संतरा का बगीचा लगाया था। हर साल पैदावार बढ़ती जा रही है। उनकी मेहनत और लगन को देखकर क्षेत्र में लोग उनको संतरे वाले महेश भाई कहने लगे हैं।

निमाड़ क्षेत्र में संतरे वाले महेश भाई के रूप में जाने जाने वाले महेश गुर्जर बताते हैं कि 2013 से पहले मैं भी सभी किसानों के तरह पारंपरिक खेती करता था। इसमें एक एकड़ में करीब एक लाख का मुनाफा हो पाता था। मैंने नया प्रयोग करने के बारे में सोचा। महाराष्ट्र के नागपुर के संतरे के बारे में बहुत सुना था। तय किया कि अब साढ़े तीन एकड़ जमीन में संतरे का बगीचा लगाऊंगा। महाराष्ट्र की नर्सरी से नागपुरी संतरे के 385 पौधे बुलवाए। उस समय एक पौधे के 30 रुपए लगे थे। पहले साल पैसे ज्यादा खर्च हुए। उसके बाद धीरे-धीरे आमदनी बढ़ती चली गई और लागत कम होती गई। अब ये पौधे मुझे 20 साल तक उत्पादन देंगे। खेत में 18 बाय 18 फीट के अंतराल में पौधे लगाए। जिससे प्रकाश संश्लेषण बेहतर होता है और पौधों पर फूल आते हैं। पौधे लगने के चौथे साल से उत्पादन शुरू हो गया। यह 5वां साल है।

संतरे का बगीचा में घाटे की संभावना नहीं है। जब तक पौधे छोटे रहते हैं, तब तक पारंपरिक खेती चलती रहती है। तीन साल तक जैसे पहले फसल होती थी, वैसे ही हुई। जब पौधे बड़े होने लगे, तो एक साल फसल कम हुई। चौथे साल से संतरे के पौधे फसल देने लगे। इस बार बंपर उत्पादन हुआ है। पौधों पर संतरा फल आने से पहले फूल देखकर व्यापारी ने बगीचा खरीद लिया है। मैंने इस बार साढ़े 3 एकड़ का बगीचा 10 लाख रुपए में बेचा है। इसमें लागत हटा दी जाए, तो करीब 7 लाख रुपए का प्रॉफिट हुआ है। पौधे लगाने के चौथे साल से फल आने शुरू हो गए थे। पहले साल में 80 हजार, दूसरे साल में सवा दो लाख रुपए, तीसरे साल में साढ़े 7 लाख रुपए, चौथे साल में 8 लाख रुपए में बगीचा बेचा था। संतरे के पौधे का जीवनकाल 20 साल का होता है।

बारिश से पहले करते हैं कल्टीवेटर से जुताई

पौधे लगने के बाद दो साल तक गर्मी में ज्यादा सिंचाई करना पड़ता है। उसके बाद गर्मी में कम सिंचाई होती है, ताकि जमीन को तपन मिल सके। इससे पौधे की जड़ें मजबूत होती हैं। बारिश से पहले गर्मी में ही खेत की कल्टीवेटर से जुताई करते हैं। इससे मिट्टी भी पलट जाती है। पौधे की पुरानी जड़ें भी कट जाती हैं। इसके बाद नई जड़ें आती हैं। इससे पौधे में नया पन आता है। उत्पादन हमेशा बढ़ते क्रम में होता है। इसी तरह, पौधे की सूखी डालियों को भी काटना पड़ता है, जिससे पौधा हरा-भरा दिखता है। बगीचे में गोबर और रासायनिक खाद मिलाकर डालते हैं। गोबर खाद को खेत में ही तैयार किया जाता है। खाद को पकाने के लिए दवाओं का स्प्रे और पानी का छिड़काव करते हैं। खाद डालने के बाद पौधे के तने की पुताई करते हैं, जिससे पौधे में निकलने वाले गोंद को कंट्रोल किया जा सके।

13 से 37 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान जरूरी

संतरा की उपज के लिए दो सीजन होते हैं। अक्टूबर-नंवबर और फरवरी-मार्च। अक्टूबर में डिमांड कम होती है। अक्टूबर के सीजन में ज्यादा मेहनत नहीं करते, क्योंकि उस समय तितलियों का प्रकोप रहता है। तितलियां संतरे को चट कर जाती हैं, इसलिए फसल बर्बाद हो जाती है। दूसरा यह कि अक्टूबर में अगर अच्छा उत्पादन ले लिया, तो मुख्य सीजन यानी फरवरी-मार्च पर असर होता है। यह मार्च के सीजन को प्रभावित करता है। एक पौधे की हाइट 15 फीट होती है। जिस पर अधिकतम ढाई क्विंटल तक संतरा लगता है। अगस्त में ही व्यापारी बगीचे का सौदा कर लेते हैं। संतरे के पेड़ की बढ़ोत्तरी के लिए 13 से 37 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान जरूरी होता है। इसकी अच्छी फसल के लिए गर्म और थोड़ी आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। अच्छी बरसात और 50 से 53 प्रतिशत आर्द्रता हो तो पौधे अच्छे से विकसित होते हैं। उत्पादन भी ज्यादा मिलता है।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल से फरवरी तक शिपमेंट 5.2 बिलियन डॉलर से अधिक

बासमती चावल ने तोड़ा निर्यात का रिकॉर्ड, और बढ़ सकता है एक्सपोर्ट

जागत गांव हमार, नई दिल्ली।

वित्त वर्ष 2024 में बासमती चावल के निर्यात ने मात्रा और मूल्य दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल से फरवरी तक शिपमेंट 5.2 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है और निर्यात मात्रा 4.67 मिलियन टन से अधिक है जो एक नया रिकॉर्ड है। जबकि मार्च के आंकड़ों को शामिल करने के बाद पूरे वित्तीय वर्ष के लिए निर्यात एक नया रिकॉर्ड स्थापित करने का अनुमान है। मिडिल ईस्ट में चल रही भूराजनीतिक तनाव के कारण चिंताएं पैदा होती हैं, जो 70 प्रतिशत से अधिक बासमती निर्यात के लिए एक प्रमुख बाजार है। व्यापारिक सूत्रों से संकेत मिलता है कि क्षेत्र में ईरान और इज़राइल के बीच हालिया संघर्ष नए वित्तीय वर्ष में भारतीय निर्यातकों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा कर सकता है। स्थिति पर बारीकी से नजर रखी जा रही है, क्योंकि बासमती चावल के निर्यात पर इसका संभावित प्रभाव अनिश्चित बना हुआ है। लाल सागर क्षेत्र में हाल के हमलों के परिणामस्वरूप भारतीय निर्यातकों को पहले से ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, जिससे यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे गंतव्यों के लिए शिपिंग लागत और पारगमन समय में वृद्धि हुई है।

बढ़ सकती हैं निर्यात और कीमतें- विश्लेषकों का मानना है कि मौजूदा तनाव के कारण निर्यात और कीमतें भी बढ़ सकती हैं। ईरान और इराक जैसे देशों के पास वर्तमान में किसी भी भूराजनीतिक नतीजों से निपटने के लिए पर्याप्त स्टॉक है, जबकि सऊदी अरब, ओमान, कतर और संयुक्त अरब अमीरात जैसे अन्य खाड़ी देशों को कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे बासमती चावल के निर्यात ऑर्डर में संभावित रूप से वृद्धि हो सकती है।

सऊदी अरब सबसे बड़ा खरीददार

व्यापार विश्लेषक और बासमती चावल प्राकृतिक इतिहास और भौगोलिक संकेत पुस्तक के लेखक एस.चंद्रशेखरन का सुझाव है कि ईरान को चालू वित्त वर्ष में चावल की खरीद में 30 प्रतिशत की वृद्धि होने की उम्मीद है। बासमती चावल के आयात का हिस्सा ईरानी सरकार की खाद्य नीति पर निर्भर करेगा। अप्रैल से फरवरी की अवधि के दौरान, बासमती शिपमेंट के मूल्य में 22 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। सबसे बड़े खरीदार सऊदी अरब को 1.1 बिलियन से अधिक मूल्य का बासमती चावल आयात किया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 920 मिलियन था। सऊदी अरब को निर्यात 9.61 लाख टन तक पहुंच गया, जो पहले 8.51 लाख टन था।

इराक दूसरे सबसे बड़े खरीदार के रूप में उभरा

पिछले वर्ष की तुलना में मात्रा और मूल्य दोनों दोगुने से अधिक के साथ इराक दूसरे सबसे बड़े खरीदार के रूप में उभरा। अप्रैल से फरवरी के दौरान भारत से इराक का बासमती चावल आयात 7.02 लाख टन रहा, जो पिछले साल 3.13 लाख टन था। इराक में बासमती शिपमेंट का मूल्य 757 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया।

ईरान अब तीसरे स्थान पर

ईरान, जो पहले दूसरा सबसे बड़ा खरीदार था, अब तीसरे स्थान पर है, अप्रैल से फरवरी के दौरान शिपमेंट का मूल्य घटकर 6.44 लाख टन हो गया है, जो पिछले वर्ष 9.27 लाख टन था। अप्रैल से फरवरी के दौरान ईरान को बासमती का निर्यात 652.70 मिलियन डॉलर का हुआ, जो पिछले साल की समान अवधि के दौरान 911.02 मिलियन डॉलर से कम है।

गर्मी के मौसम में केले का बागों का प्रबंधन बेहद जरूरी

गर्मी से खराब हो सकती है केले की फसल, जानिए कैसे करें बचाव

जागत गांव हमार, भोपाल।

देशभर में अल नीनो के प्रभाव की वजह से अप्रैल में ही खूब गर्मी पड़ रही है। मौसम विभाग के मुताबिक, मई और जून में तेज गर्मी पड़ने की आशंका है, जिसकी वजह से केले की फसल को भारी नुकसान हो सकता है। तेज गर्म हवा केले के लिए काफी हानिकारक होती है इससे पौधों की नमी कम हो जाती है, जिसके कारण पौधे मुरझाकर सूखने लगते हैं। इसलिए गर्मी के मौसम में केले का बागों का प्रबंधन बेहद जरूरी है। कृषि वैज्ञानिकों की तरफ से भी केले की फसल के बचाव के लिए सुझाव दिए गए हैं।

कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर अप्रैल और मई में गर्मी का प्रकोप बढ़ता है तो केले के पौधे सूख सकते हैं। इसलिए अगर समय रहते केले की फसल का प्रबंधन नहीं किया तो 25 से 30 फीसदी नुकसान हो सकता है।

गर्म हवा पौधों को गिरा सकती है- वैज्ञानिकों ने बताया कि 80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली गर्म हवा पौधों को गिरा सकती है। इसलिए केले के बाग में नमी बनाए रखना बेहद जरूरी है ताकि पौधे सूख ना पाएं। केले की फसल को लू से बचाने के लिए दक्षिण-पश्चिम दिशा में नेट लगाएं और बगीचे के किनारे पर ग्रीन शेड नेट का उपयोग करें। इसके अलावा वायु अवरोधक पेड़ जैसे गजराज घास या ढेंचा लगाने से वातावरण ठंडा रहेगा और गर्म हवा भी नहीं आएगी।

लू से कैसे करें बचाव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि अगर केले के पौधे में फलों का गुच्छा अप्रैल-मई के महीने में आ जाएं तो खतरा ज्यादा बढ़ जाता है। इसलिए केले के बागों में कुछ इस तरह का प्रबंधन करें, जिससे केले का गुच्छा अप्रैल-मई में ना निकले। लेकिन इसके बाद भी अगर केले के पौधे में गुच्छे आ जाएं तो उन्हें ढक दें क्योंकि गर्म हवा के कारण केले का बंच काला पड़ जाता है। लू से बचाव के लिए आप केले के बंच को केले की सूखी पत्तियों से भी ढक सकते हैं। इसके अलावा बेहद पतले पॉली बैग, यानी स्कैटिंग बैग से भी केले के बंच को पूरी तरह से कवर कर सकते हैं। केले के गुच्छों को ढकने से यह कीट और पक्षियों से भी सुरक्षित रहता है। वहीं, इससे फल जल्दी पक भी जाते हैं।

थालों में केले की सूखी पत्तियां या फसल अवशेष का मल्चिंग करें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि गर्मियों के मौसम में केले के पौधों में नमी बनाए रखना बेहद जरूरी है क्योंकि इस मौसम में पानी का वाष्पीकरण काफी तेजी से होता है और अल नीनो के कारण तापमान भी बढ़ता है, जिससे पौधे सूखने लगते हैं। ऐसे में किसान केले के पौधों के थालों में केले की सूखी पत्तियां या फसल अवशेष का मल्चिंग करें। इससे पौधे में नमी ज्यादा देर तक बनी रहती है। केले के पौधों की अच्छी ग्रोथ के लिए सिंचाई करना बहुत जरूरी है। इसलिए सप्ताह में एक बार सिंचाई अवश्य करें।

गिरने से बचाने के लिए स्टेकिंग जरूरी

कृषि वैज्ञानिक का कहना है कि जब केले के पौधों में फलों के गुच्छे निकलने लगते हैं तो उनका भार बढ़ जाता है। ऐसे में अगर हवा चलती है तो वजन के कारण केले का बंच गिरने की आशंका रहती है। इससे बचने के लिए स्टेकिंग जरूरी है, जिसमें पौधों को बांस-बल्लियों से सहारा दिया जाता है। गर्मियों में केले के पौधों को ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है इसलिए उन्हें ड्रिप से पानी दें। इसके अलावा फर्टिलाइजेशन भी बेहद जरूरी है ताकि फलों की गुणवत्ता अच्छी रहे। इस बात का ध्यान रखें कि खाद में पोटाश की मात्रा 400 ग्राम से कम ना हो। इन टिप्स की मदद से आप केले की फसल का बेहतर तरीकों से प्रबंधन कर सकते हैं, जिससे केले की पैदावार पर गर्मी के मौसम का बुरा प्रभाव भी नहीं पड़ेगा और फलों की गुणवत्ता भी अच्छी रहेगी।

आपके पास होने चाहिए ये 7 दस्तावेज

ड्रोन दीदी: जानिए कैसे होता है का सेलेक्शन

जागत गांव हमार, भोपाल।

देश में महिलाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मोदी सरकार कई योजनाओं का संचालन करती रहती है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिला स्वयं सहायता समूहों को ड्रोन तकनीक की पेशकश करते हुए पीएम मोदी ड्रोन दीदी योजना की शुरुआत की है। इस पहल का उद्देश्य कृषि में तकनीक को आगे बढ़ाना और महिलाओं को सशक्त बनाना है। आइए जानते हैं नमो ड्रोन दीदी योजना में महिलाओं का चयन किस प्रकार किया जाता है। प्रधानमंत्री ड्रोन दीदी योजना 30 नवंबर 2023 को शुरु की गई थी। इस योजना का लक्ष्य स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 15,000 से अधिक महिलाओं को ड्रोन दीदी बनने का अवसर प्रदान करके सशक्त बनाना है। इसके अतिरिक्त, इस योजना में महिलाओं के लिए 15-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शामिल है, जो उन्हें ड्रोन चलाने और फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करने में सक्षम बनाता है।

आत्मनिर्भर बनेंगी महिलाएं: पीएम ड्रोन दीदी योजना के माध्यम से महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी और कृषि कार्यों में प्रभावी ढंग से योगदान देंगी। इसके अतिरिक्त, लाभार्थियों को ड्रोन संचालन के लिए 15,000 रुपये का मासिक अनुदान भी मिलेगा। प्रधानमंत्री ड्रोण दीदी योजना कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण और तकनीकी उन्नति की दिशा में एक कदम है, जो कृषि क्षेत्र की वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करता है।

योजना के लिए पात्रता

- भागीदारी के लिए महिला स्वयं सहायता समूहों में सदस्यता एक शर्त है।
- केवल भारतीय महिलाएं ही इस योजना के लिए आवेदन करने के लिए पात्र हैं, देश की महिलाओं को सशक्त बनाने पर सरकार जोर दे रही है।
- योजना में रुचि रखने वाली महिलाओं की आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए, यह देखते हुए कि वे वयस्क हो गई हैं और कानूनी रूप से कार्यक्रम में भाग लेने में सक्षम हैं।

जरूरी दस्तावेज

- प्रधानमंत्री ड्रोन दीदी योजना 2024 के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करना चाहते हैं, उनके लिए कुछ आवश्यक दस्तावेजों की आवश्यकता होती है।
- आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, पैन कार्ड, ईमेल आईडी, फोन नंबर, स्वयं सहायता ग्रुप का आईडी कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो

क्या हैं इस योजना के लाभ

नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत महिलाओं को 15 दिनों की ट्रेनिंग दी जाती है। जिसके लिए उन्हें 15000 रुपये भी दिया जाता है। यह रकम डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए उनके खाते में भेजी जाती है। सरकार का लक्ष्य इस योजना के तहत 10 करोड़ से अधिक स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 15,000 महिलाओं को लाभ पहुंचाना है। इस योजना के तहत प्रशिक्षण पूरा होने के बाद सरकार की ओर से महिलाओं को ड्रोन भी दिए जाते हैं।

डायबिटीज के मरीजों के लिये शक्कर का वैकल्पिक स्रोत है स्टीविया

जागत गांव हमार, जबलपुर।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के औषधीय उद्यान प्रभारी डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी की देखरेख में स्टीविया की खेती की जा रही है। डॉ. तिवारी ने बताया कि स्टीविया की खेती किसानों की आय का स्त्रोत ही नहीं, बल्कि डायबिटीज के मरीजों के लिये शक्कर का वैकल्पिक स्रोत होने के साथ-साथ ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है। भारत में आजकल हर तीसरा-चौथा व्यक्ति डायबिटीज, मोटापा जैसी घातक बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। इसलिये ऐसे मरीजों के लिये शुगर का वैकल्पिक स्त्रोत एवं बीमारी से बचाव की आवश्यकता है। स्टीविया की पत्तियां शक्कर की तुलना में 20 से 25 गुना अधिक मीठी होने के कारण इसका व्यवसायिक उपयोग पूरे विश्व में बहुत तेजी से हो रहा है।

स्टीविया की खेती प्रसंस्करण, मूल्य-संवर्धन, विपणन पर जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय में हो रहा है शोध

उत्पादों का पेटेंट प्राप्त करने की दिशा में कार्य प्रगति पर

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा स्टीविया की उन्नत खेती प्रसंस्करण, मूल्य-संवर्धन एवं विपणन के क्षेत्र में शोध कार्य किये जा रहे हैं, साथ ही इसके उत्पादों का पेटेंट प्राप्त करने की दिशा में कार्य प्रगति पर है। दरअसल इसकी खेती के लिये मध्यप्रदेश के वो सभी क्षेत्र उपयुक्त हैं, जहां जल भराव की समस्या नहीं होंने के साथ-साथ सिंचाई की समुचित व्यवस्था है। स्टीविया की खेती से परंपरागत कृषि फसलों की तुलना में तीन गुना तक अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। स्टीविया की फसल एक बार लगाने के बाद 5 साल तक पत्तियों का उत्पादन किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष 3 बार पत्तियों की कटिंग की जा सकती है। स्टीविया के पत्तो से ही औषधि बनाई जाती है। हर वर्ष 30 से 35 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर होने की संभावना बताई गई है। जिससे वर्ष भर में प्रति हेक्टेयर 150 से 175 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन होता है। लिहाजा स्टीविया की पत्तियां सौ रूपये किलोग्राम के मूल्य से विक्रय की जाती हैं। विश्वविद्यालय स्थित औषधीय उद्यान में वर्तमान में 11 सौ प्रकार के अलग-अलग किस्मों के पौधे संरक्षित हैं। जिनसे कई गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु औषधियां तैयार की जाती हैं एवं शोध कार्य किये जा रहे हैं।

स्टीविया से फायदे

- स्टीविया के सेवन से मोटापा कम किया जा सकता है।
- स्टीविया से डायबिटीज को नियंत्रित किया जा सकता है।
- हार्ट के मरीजों के लिये स्टीविया फायदेमंद होती है।
- जोड़ों के दर्द में स्टीविया आराम दिलाती है।
- स्टीविया की खेती से कम लागत में कई गुना अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है।
- स्टीविया की खेती कभी भी की जा सकती है।

जलाने से खेत की उर्वरता पर विपरीत प्रभाव

नरवाई को मिटटी में मिलाकर खाद बनाएं

जागत गांव हमार, टीकमगढ़।

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह एवं हंसनाथ खान द्वारा किसानों को गेंहूं की नरवाई जलाने से भूमि एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्परिणामों के बारे में समसमायिकी सलाह दी गयी। गेंहूं की फसल काटने के पश्चात् जो तने के अवशेष अर्थात् नरवाई होती है, किसान भाई उसमें आग लगाकर उसे नष्ट कर देते हैं। नरवाई में लगभग नत्रजन 0.5 प्रतिशत, स्फुर 0.6 प्रतिशत और पोटाश 0.8 प्रतिशत पाया जाता है, जो नरवाई में जलकर नष्ट हो जाता है और गेंहूँ फसल में दाने से डेढ़ गुना भूसा होता है। अर्थात् यदि एक हेक्टेयर में 40 क्विंटल गेहूँ का उत्पादन होगा तो भूसे की मात्रा 60 क्विंटल होगी उस भूसे से 30 किलो नत्रजन, 36 किलो स्फुर, 48 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर प्राप्त होगा जो वर्तमान मूल्य के आधार पर लगभग रुपये 3000 का होगा जो जलकर नष्ट हो जाता है। इसके साथ ही भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है, अर्थात् भूमि में उपस्थित सूक्ष्मजीव एवं केंचुआ आदि जलकर नष्ट हो जाते हैं। इनके नष्ट होने से खेत की उर्वरता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भूमि की ऊपरी पर्त में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्व आग लगने के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं साथ ही भूमि की भौतिक दशा भी खराब हो जाती है।

जानिए क्या कहते हैं वैज्ञानिक शोध

वैज्ञानिक शोधों के अनुसार एक हेक्टेयर भूमि में फसल अवशेष जैसे गेंहूँ / धान को जलाने से पर्यावरण में कार्बन डाईऑक्साइड 9.3 टन, अमोनिया 1.0 टन, नाईट्रस ऑक्साइड 1.5 टन एवं अन्य जहरीली गसें उत्पन्न होती हैं। जो पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं तथा मनुष्य एवं पशुओं में घातक बीमारियों को पैदा करती हैं। फसल अवशेषों को मृदा में गहरी जुताई करके मिला देने से रोग, कीट और खरपतवारों में कमी होती है, उससे प्रति हेक्टेयर रुपये 2500 की बचत होती है तथा दलहनी फसल अवशेषों से बनाये गये कम्पोस्ट में नत्रजन 1.8 प्रतिशत, फास्फोरस 3.4 प्रतिशत तथा पोटाश 0.4 प्रतिशत तक अधिक पाया जाता है। बायो-डीकम्पोजर का उपयोग फसल अवशेषों को शीघ्र सडाकर कम्पोस्ट खाद तैयार करने में किया जा सकता है।

फसलों की नरवाई को ना जलाएं: उप संचालक कृषि

जागत गांव हमार, सतना।

उप संचालक (कृषि) मनोज कश्यप ने बताया कि ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशानुसार पर्यावरण सुरक्षा के लिए धान एवं गेहूं की फसलों की कटाई उपरांत फसल के अवशेषों को खेतों में जलाये जाने को प्रतिबंधित किया गया है। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने सभी अनुविभागीय दण्डाधिकारियों को समय-समय पर निर्देश जारी कर नरवाई से होने वाली आग जनित घटनाओं को रोकने के लिए नरवाई जलाने को प्रतिबंधित करने के लिए निर्देश दिये हैं। सतना के उप संचालक (कृषि) मनोज कश्यप ने कलेक्टर के निर्देशानुसार संबंधित अनुविभागीय अधिकारी को अपने स्तर से पटवारियों के माध्यम से आगजनित घटनाओं का तत्काल सर्वे कराकर आग लगाने वाले अवांछित तत्वों पर पृथक से दण्डात्मक कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। सेटेलाइट मॉनिटरिंग रिपोर्ट सिस्टम ने पूरे प्रदेश में नरवाई से लगने वाली आग की रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाती है। सतना जिले से सेटेलाइट मॉनिटरिंग रिपोर्ट संबंधित एसडीएम को भेजते हुए कार्यवाही की अपेक्षा की गई है।

एनबीएफजीआर पहुंचे भाकृअनुप के महानिदेशक, लिया जायजा

लखनऊ। डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) का भाकृअनुप-केन्द्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीएफजीआर) में गत 14 अप्रैल को आगमन हुआ। डॉ. पाठक ने संस्थान द्वारा मत्स्य प्रजातियों के अन्वेषण एवं लक्षण वर्णन के माध्यम से देश में मत्स्य उत्पादन बढ़ाने तथा प्राकृतिक आवासों में मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण सहित अन्य अनुसंधान कार्यक्रमों के विस्तार का जायजा लियाड्ड महानिदेशक ने देश के किसानों एवं युवाओं की आजीविका सुरक्षा हेतु मछली पालन व इससे जुड़े अन्य व्यवसायों को अपनाने हेतु सामुदायिक जागरूकता बढ़ाने पर जोर दिया। डॉ. पाठक द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत देश में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए मत्स्य पालकों व उद्यमियों को दिये जाने वाले अनुदानों के बारे में भी जानकारी साझा की गई। महानिदेशक ने एनबीएफजीआर परिसर के गंगा एक्वेरियम में उत्तर प्रदेश की राजकीय मछली 'चिताला' का अनावरण कर वैज्ञानिकों के माध्यम से सेंट्रल

एक्वेरियम एवं तालाब में रिलीज़ भी किया। इस अवसर पर गंगा एक्वेरियम का ट्रेड मार्क, मछलियों के डीएनए बारकोड पर पुस्तक का विमोचन के साथ-साथ क्रस्टेशियन प्रजातियों के पहचान हेतु ऑनलाइन डेटाबेस का भी विमोचन किया गया। डॉ. उत्तम कुमार सरकार, निदेशक (एनबीएफजीआर) ने संस्थान की गतिविधियों एवं अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति से संबंधित विचार साझा किया। इस अवसर पर लखनऊ स्थित भाकृअनुप संस्थानों के निदेशकगण, डॉ. आर. विश्वनाथन, डॉ. टी. दामोदरन सहित एनबीएफजीआर के समस्त वैज्ञानिक एवं विभिन्न अनुभागों के प्रभारी उपस्थित रहे।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 9425048589

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, संपर्क -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)